REPORTING OF PEACE CENTRE, BHAGALPUR

SEPTEMBER 2024

For Individual Event

❖ Date: 21 **September 2024**

Time: 4pm- 6pm

Location **: कलाकेन्द्र, भागलपुर, बड़ी जमीन, गोराडीह**

Name of Event/Activity : जातीय, नस्लीय व धार्मिक सद्भाव- लोकतंत्र का आधार"

Type of Activity : संवाद

Brief Description: Highlights of the activity (Not more than 300 words)

21 सितंबर 2024 को पीस सेंटर परिधि द्वारा कला केंद्र भागलपुर में विश्व शांति दिवस के अवसर पर जातीय, नस्लीय व धार्मिक सद्भाव- लोकतंत्र का आधार" विषयक संवाद का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व कुलपति डॉ फारूक अली ने करते हुए कहा कि हमें तो आशा है कि बदलाव आने वाला है और शांति कि बात करने वाले बढ़ेंगे क्योंकि शांति के बिना मानवता नहीं बचेगी। डॉ योगेंद्र ने कहा कि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद बने विश्व पंचायत आज कुछ नहीं कर पा रहा। आज देश दुनिया में न्याय और बराबरी का घोर अभाव है, कोई अंकुश नहीं है। ऐसे में शांति कैसे स्थापित होगी? आज धार्मिक कट्टरता और धार्मिक नासमझी बढ़ती जा रही है। इसलिए पढ़ने और समझने का वातावरण बनाने की जरूरत है। संचालन करते हुए राहुल ने कहा कि किसी भी राष्ट्र और समाज के विकास के लिए सबसे प्रमुख आवश्यकता है शांति। शांति के माहौल में ही लोकतंत्र मजबूत हो सकता है।

अर्जुन शर्मा ने धर्म के नाम पर समाज में अशांति फैलाने की राजनीति के विरोध करने की बात की। उदय ने कहा मनुष्य सभ्यता की सबसे अहम निर्मिती प्रेम है। प्रेम के सूत्र से ही बंधकर, कबीला, गांव, परिवार और देश बना है। लेकिन संस्थाओं में प्रतिस्पर्धा और श्रेष्ठता बोध के कारण नफरत और हिंसा का भी जन्म हुआ। शांति की अहमियत को भांपते हुए ही विश्व शांति दिवस मनाने का ऐलान यूएन ने किया। जाति नस्ल वर्ण और धार्मिक संप्रदाय ये भी सभ्यता के क्रम में ही पैदा हुए है। धर्म के नाम पर जितनी हिंसा दुनियां में हुई है उतनी कभी नहीं हुई। शांति की स्थापना समतावादी समाज रचना से संभव है। मनोज शर्मा ने कहा कि लोकतांत्रिक ढांचा को मजबूत करने के लिए युवाओं को आगे आने की जरूरत है। इसलिए जाति नल और धार्मिक सद्भाव के लिए युवाओं की ट्रेनिंग जरूरी है। पी हेमब्रम ने कहा कि धर्म के नाम पर आज एक दूसरे के प्रति घृणा पैदा करने की कोशिश हो रही है परंतु सच तो यह है कि धर्म प्रेम सिखाता है। भेदभाव और गैरबराबरी पर टिके समाज में शांति की कामना नहीं की जा सकती। महात्मा गांधी ने नस्लीय भेद भाव के खिलाफ ही तो आंदोलन छेड़ा था। भारत का स्वतंत्रता संग्राम भी नस्लीय भेद के खिलाफ था। असली लोकतंत्र तभी स्थापित होगा जब समाज में जाति , वर्ण , वंश , नस्ल और धर्म के आधार पर किया जाने वाला भेद भाव समाप्त होगा। मुक्कमल बराबरी ही लोकतंत्र आधार है। शांति ही लोकतंत्र का आधार है। स्मिता कुमारी ने कहा कि आज के अफवाहतंत्र के कारण युवाओं में सदभाव कम होता जा रहा है।

Theme: जातीय, नस्लीय व धार्मिक सद्भाव- लोकतंत्र का आधार

Rationale: सद्भाव के प्रति जागरूकता

Resource Person/s : उदय, डा फारुक अली

Impact of Activity:

1. Total number of participants (in that activity) : 31

दैनिक भास्कर, 22/9/24

6

शांति के बिना मानवता नहीं बचेगी: डॉ. फारूख

शनिवार को कलाकेंद्र में संवाद कार्यक्रम का हुआ आयोजन।

सिटी रिपोर्टर | भागलपुर

पीस सेंटर परिधि द्वारा कला केंद्र में शनिवार को विश्व शांति दिवस मनाया गया। इस अवसर पर जातीय, नस्लीय व धार्मिक सद्भाव- लोकतंत्र का आधार विषय पर संवाद का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व कुलपति डॉ. फारूक अली ने की। डॉ. फारूक अली ने कहा कि हमें तो आशा है कि बदलाव आने वाला है और शांति कि बात करने वाले बढ़ेंगे। क्योंकि शांति के बिना मानवता नहीं बचेगी। डॉ. योगेंद्र ने कहा कि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद बने विश्व पंचायत आज कुछ नहीं कर पा रहा। आज देश दुनिया में न्याय और बराबरी का घोर अभाव है, कोई अंकुश नहीं है। ऐसे में शांति कैसे स्थापित होगी? आज धार्मिक कट्टरता और धार्मिक नासमझी बढ़ती जा रही है। इसलिए पढ़ने और समझने का वातावरण बनाने की जरूरत है। संचालन करते हुए राहुल ने कहा कि किसी भी राष्ट्र और समाज के विकास के लिए शांति सबसे प्रमुख आवश्यकता है। शांति के माहौल में ही लोकतंत्र मजबूत हो सकता है। उदय ने कहा कि मनुष्य सभ्यता की सबसे अहम निर्मिती प्रेम है। प्रेम के सूत्र से ही बंधकर, कबिला, गांव, परिवार और देश बना है।

[redacted]

ललन कुमार पूर्व रेलवे के जोनल रेलवे यूजर्स कंसल्टेटिव कमेटी यानी जेआरयूसीसी में बतौर विधानसभा के प्रतिनिधि के रूप में 2016 तक बने रहेंगे.

प्रभात खबर, 22/9/24

शांति के बिना नहीं बचेगी मानवता : डॉ योगेंद्र

भागलपुर. पीस सेंटर परिधि की ओर से शनिवार को कला केंद्र भागलपुर में विश्व शांति दिवस के अवसर पर जातीय, नस्लीय व धार्मिक सद्भाव- लोकतंत्र का आधार, विषयक संवाद का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व कुलपति डॉ फारूक अली ने की और कहा कि हमें तो आशा है कि बदलाव आने वाला है और शांति की बात करने वाले बढ़ेंगे. डॉ योगेंद्र ने कहा कि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद बनी विश्व पंचायत आज कुछ नहीं कर पा रही. आज देश-दुनिया में न्याय और बराबरी का घोर अभाव है. कोई अंकुश नहीं है. ऐसे में शांति कैसे स्थापित होगी. संचालन राहुल ने किया और कहा कि किसी भी राष्ट्र और समाज के विकास के लिए शांति की सबसे प्रमुख आवश्यकता है. अर्जुन शर्मा, उदय, पी हेम्ब्रम, स्मिता कुमारी ने भी संबोधित किया. कार्यक्रम में मृदुला सिंह, गौतम आदि थे.

कलाकेंद्र में जातीय, नस्लीय व धार्मिक सद्भाव- लोकतंत्र का आधार'' विषयक संवाद का आयोजन

केसरिया टाइम्स. भागलपुर

पीस सेंटर परिधि द्वारा कला केंद्र भागलपुर में विश्व शांति दिवस के अवसर पर जातीय, नस्लीय व धार्मिक सद्भाव- लोकतंत्र का आधार'' विषयक संवाद का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व कुलपति डॉ फारूक अली ने करते हुए कहा कि हमें तो आशा है कि बदलाव आने वाला है और शांति कि बात करने वाले बढ़ेंगे क्योंकि शांति के बिना मानवता नहीं बचेगी। डॉ योगेंद्र ने कहा कि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद बने विश्व पंचायत आज कुछ नहीं कर पा रहा। आज देश दुनिया में न्याय और बराबरी का घोर अभाव है, कोई अंकुश नहीं है। ऐसे में शांति कैसे स्थापित होगी? आज धार्मिक कट्टरता और धार्मिक नासमझी बढ़ती जा रही है। इसलिए पढ़ने और समझने का वातावरण बनाने की जरूरत है। संचालन करते हुए राहुल ने कहा कि किसी भी राष्ट्र और समाज के विकास के लिए सबसे प्रमुख आवश्यकता है शांति। शांति के माहौल में ही लोकतंत्र मजबूत हो सकता है।अर्जुन शर्मा ने धर्म के नाम पर समाज में अशांति फैलाने की राजनीति के विरोध करने की बात की। उदय ने कहा मनुष्य सभ्यता की सबसे अहम निर्मिती प्रेम है। प्रेम के सूत्र से ही बंधकर, कबीला, गांव, परिवार और देश बना है। लेकिन संस्थाओं में प्रतिस्पर्धा और श्रेष्ठता बोध के कारण नफरत और हिंसा का भी जन्म हुआ। शांति की अहमियत को भांपते हुए ही विश्व शांति दिवस मनाने का ऐलान यूएन ने किया। जाति नस्ल वर्ण और धार्मिक संप्रदाय ये भी सभ्यता के क्रम में ही पैदा हुए है। धर्म के नाम पर जितनी हिंसा दुनियां में हुई है उतनी कभी नहीं हुई। शांति की स्थापना समतावादी समाज रचना से संभव है। मनोज शर्मा ने कहा कि लोकतांत्रिक ढांचा को मजबूत करने के लिए युवाओं को आगे आने की जरूरत है। इसलिए जाति नल और धार्मिक सद्भाव के लिए युवाओं की ट्रेनिंग जरूरी है। पी हेमब्रम ने कहा कि धर्म के नाम पर आज एक दूसरे के प्रति घृणा पैदा करने की कोशिश हो रही है परंतु सच तो यह है कि धर्म प्रेम सिखाता है। हमारे देश का लोकतांत्रिक ढांचा हमें भेदभाव और गैरबराबरी पर टिके समाज में शांति की कामना नहीं की जा सकती। महात्मा गांधी ने नस्लीय भेद भाव के खिलाफ ही तो आंदोलन छेड़ा था। भारत का स्वतंत्रता संग्राम भी नस्लीय भेद के खिलाफ था। असली लोकतंत्र तभी स्थापित होगा जब समाज में जाति , वर्ण , वंश , नस्ल और धर्म के आधार पर किया जाने वाला भेद भाव समाप्त होगा। मुक्कमल बराबरी ही लोकतंत्र आधार है। शांति ही लोकतंत्र का आधार है। स्मिता कुमारी ने कहा कि आज के अफवाहतंत्र के कारण युवाओं में सदभाव कम होता जा रहा है। कार्यक्रम में डॉ फारूक अली, डॉ योगेंद्र, उदय, मृदुला सिंह, गौतम मल्लाह, एकराम हुसैन साद, दिव्या, अर्जुन शर्मा, मो फारूक, सौरभ कुमार, निलंजना कुमारी, कृष्किा गुप्ता, मो फारूक, ललन, भरत, स्मिता कुमारी, उज्जवल घोष आदि मौजूद थे।

❖ Date **: 28 September 2024**

Time: 3pm -5pm

Location: कलाकेन्द्र, भागलपुर

Name of Event/Activity: **"भगतसिंह जयंती"**

Type of Activity : जयंती

Brief Description: Highlights of the activity (Not more than 300 words)

दिनांक 28 सितंबर 2024 को पीस सेंटर परिधि द्वारा कला केंद्र भागलपुर में शहीदे आजम भगत सिंह की जयंती मनाई गई। जयंती सभा की अध्यक्षता उज्जवल कुमार घोष ने की। इस अवसर पर संचालन करते हुए राहुल ने कहा कि भगत सिंह को क्रांतिकारी कहा जाता है। क्रांतिकारी होने का अर्थ गोला बारूद से हिंसा करना नहीं है बल्कि समाज की घिसी-पिटी पुरानी व्यवस्था को उखाड़ कर नई और लोक कल्याणकारी व्यवस्था स्थापित करने की कोशिश ही क्रांतिकारिता है । इसीलिए भगत सिंह ने कहा था- "पिस्तौल और बम इंकलाब नहीं लाते, क्रांति की तलवार विचारों की सान पर तेज होती है। " इन्होंने देश की आजादी के लिए अपने को कुर्बान कर दिया। वे स्वतंत्र भारत को एक समाजवादी देश बनाना चाहते थे। समाजवाद का मतलब सरकार के केंद्र में आम लोगों का होना है। उज्जवल कुमार घोष ने कहा कि आज की पीढ़ी भगत सिंह को एक हिंसक क्रांतिकारी के तौर पर देखी है जबकि भगत सिंह हमेशा विचारों को महत्व देते थे। अपने फांसी के तख्त पर पहुंचने के पहले तक वे किताबें पढ़ते रहे। इस अवसर सार्थक भरत ने कहा कि भगत सिंह एक महान स्वतंत्रता सेनानी होने के साथ-साथ उच्च कोटि के दार्शनिक भी थे उन्होंने समाज के लिए जो दर्शन प्रस्तुत किए थे वह अंबेडकर के समता स्वतंत्रता और बंधुता के विचारों से मेल खाती थी। बाबा साहब भीमराव अंबेडकर जब संविधान रच रहे थे तब उन्होंने भगत सिंह के समाजवादी विचारों का बखूबी ख्याल रखा था। बाबा साहेब डॉ अंबेडकर के राजकीय समाजवाद में भी भगत सिंह का प्रभाव देखा जा सकता है। मनोज कुमार ने कहा भगत सिंह भारत में फैल रहे सांप्रदायिकता से बहुत दुखी थे। भगत सिंह की राष्ट्रीयता व्यापक अर्थ मे थी। भारत में व्याप्त सांप्रदायिकता को लेकर उन्होंने कई लेख लिखे जिसमे भारत की सांप्रदायिकता के कारणों पर प्रहार किया गया। लगभग 100 साल पहले ही उन्होंने कहा था कि सांप्रदायिक सोच के साथ हम स्वतंत्रता की बात नहीं कर सकते। ऐसी स्वतंत्रता आम लोगों की स्वतंत्रता नहीं होगी और इसमें सत्ता द्वारा लोगों का दमन होता रहेगा।

शहीद भगत सिंह की जयंती मनाई

भारत में समाजवाद चाहते थे शहीद भगत सिंह

कला केंद्र में शहीद भगत सिंह की जयंती मनाते पीस सेंटर के सदस्य।

सिटीरिपोर्टर| भागलपुर

पीस सेंटर परिधि के सदस्यों ने शनिवार को कला केंद्र में शहीद भगत सिंह की जयंती मनाई। संचालन कर रहे राहुल ने कहा कि भगत सिंह को क्रांतिकारी कहा जाता है। क्रांतिकारी होने का अर्थ गोला बारूद से हिंसा करना नहीं है, बल्कि समाज की घिसी-पिटी पुरानी व्यवस्था को उखाड़ कर नई और लोक कल्याणकारी व्यवस्था स्थापित करने की कोशिश ही क्रांतिकारिता है। इसलिए भगत सिंह ने कहा था \'पिस्तौल और बम इंकलाब नहीं लाते, क्रांति की तलवार विचारों की शान पर तेज होती है। भगत सिंह स्वतंत्र भारत को एक समाजवादी देश बनाना चाहते थे। उज्ज्वल कुमार घोष ने कहा कि आज की पीढ़ी भगत सिंह को एक हिंसक क्रांतिकारी के तौर पर देखी है। जबकि भगत सिंह हमेशा विचारों को महत्व देते थे।

Theme: राष्ट्रीयता का अर्थ

1. Total number of participants (in that activity) : 43

पीस परिधि सेंटर के द्वारा शहीदे आजम भगत सिंह की जयंती मनाई गई

केलांचल टाइम्स. भागलपुर

पीस सेंटर परिधि द्वारा कला केंद्र भागलपुर में शहीदे आजम भगत सिंह की जयंती मनाई गई। जयंती सभा की अध्यक्षता उज्जवल कुमार घोष ने की। इस अवसर पर संचालन करते हुए राहुल ने कहा कि भगत सिंह को क्रांतिकारी कहा जाता है। क्रांतिकारी होने का अर्थ गोला बारूद से हिंसा करना नहीं है बल्कि समाज की घिसी-पिटी पुरानी व्यवस्था को उखाड़ कर नई और लोक कल्याणकारी व्यवस्था स्थापित करने की कोशिश ही क्रांतिकारिता है । इसीलिए भगत सिंह ने कहा था- "पिस्तौल और बम इंकलाब नहीं लाते, क्रांति की तलवार विचारों की सान पर तेज होती है। " इन्होंने देश की आजादी के लिए अपने को कुर्बान कर दिया। वे स्वतंत्र भारत को एक समाजवादी देश बनाना चाहते थे। समाजवाद का मतलब सरकार के केंद्र में आम लोगों का होना है। उज्जवल कुमार घोष ने कहा कि आज की पीढ़ी भगत सिंह को एक हिंसक

क्रांतिकारी के तौर पर देखी है जबकि भगत सिंह हमेशा विचारों को महत्व देते थे। अपने फांसी के तख्त पर पहुंचने के पहले तक वे किताबें पढ़ते रहे। इस अवसर सार्थक भरत ने कहा कि भगत सिंह एक महान स्वतंत्रता सेनानी होने के साथ-साथ उच्च कोटि के दार्शनिक भी थे उन्होंने समाज के लिए जो दर्शन प्रस्तुत किए थे वह अंबेडकर के समता स्वतंत्रता और बंधुता के विचारों से मेल खाती थी। बाबा साहब भीमराव अंबेडकर जब संविधान रच रहे थे तब उन्होंने भगत सिंह के समाजवादी विचारों का बखूबी ख्याल रखा था। बाबा साहेब डॉ अंबेडकर के राजकीय समाजवाद में भी भगत सिंह का प्रभाव देखा जा सकता है। मनोज कुमार ने कहा भगत सिंह भारत में फैल रहे सांप्रदायिकता से बहुत दुखी थे। इस अवसर पर उज्जवल घोष, श्रीमती सुजाता, प्रियंका सिंह, मनोज कुमार, शालिनी चौधरी, सुप्रिया, ऋचा आनंद, संजना दत्ता, मो. सहबाज, भाव्या, मुकेश कुमार सिंह, अमित कुमार, सुरैया सिद्दीकी आदि उपस्थित थे।

लोक कल्याणकारी व्यवस्था स्थापित करने की कोशिश ही क्रांतिकारिताः राहुल

भागलपुर, सोनभद्र संवाददाता

पीस सेंटर परिधि द्वारा कला केंद्र भागलपुर में शहीदे आजम भगत सिंह की जयंती मनाई गई। जयंती सभा की अध्यक्षता उज्जवल कुमार घोष ने की। संचालन करते हुए राहुल ने कहा कि भगत सिंह को क्रांतिकारी कहा जाता है। क्रांतिकारी होने का अर्थ गोला बारूद से हिंसा करना नहीं है बल्कि समाज की घिसी-पिटी पुरानी व्यवस्था को उखाड़ कर नई और लोक कल्याणकारी व्यवस्था स्थापित करने की कोशिश ही क्रांतिकारिता है । इसीलिए भगत सिंह ने कहा था कि "पिस्तौल और बम इंकलाब नहीं लाते, क्रांति की तलवार विचारों की सान पर तेज होती है। " इन्होंने देश की आजादी के लिए अपने को कुर्बान कर दिया। वे स्वतंत्र भारत को एक समाजवादी देश बनाना चाहते थे। समाजवाद का मतलब सरकार के केंद्र में आम लोगों का होना है। उज्जवल कुमार घोष ने कहा कि आज की पीढ़ी भगत सिंह को एक हिंसक क्रांतिकारी के तौर पर देखी है, जबकि भगत सिंह हमेशा विचारों को महत्व देते थे। अपने फांसी के तख्त पर पहुंचने के पहले तक वे किताबें पढ़ते रहे। सार्थक भरत ने कहा कि भगत सिंह एक महान स्वतंत्रता सेनानी होने के साथ-साथ उच्च कोटि के दार्शनिक भी थे। उन्होंने समाज के लिए जो

कला केंद्र में शहीदे आजम भगत सिंह की मनाई गई जयंती

दर्शन प्रस्तुत किए थे वह अंबेडकर के समता स्वतंत्रता और बंधुता के विचारों से मेल खाती थी। बाबा साहब भीमराव अंबेडकर जब संविधान रच रहे थे, तब उन्होंने भगत सिंह के समाजवादी विचारों का बखूबी ख्याल रखा था। बाबा साहेब डॉ अंबेडकर के राजकीय समाजवाद में भी भगत सिंह का प्रभाव देखा जा सकता है। मनोज कुमार ने कहा भगत सिंह भारत में फैल रहे सांप्रदायिकता से बहुत दुखी थे। इस अवसर पर उज्जवल घोष, श्रीमती सुजाता, प्रियंका सिंह, मनोज कुमार, शालिनी चौधरी, सुप्रिया, ऋचा आनंद, संजना दत्ता, मो. सहबाज, भाव्या, मुकेश कुमार सिंह, अमित कुमार, सुरैया सिद्दीकी आदि उपस्थित थे।

हिंदुस्तान 29/09/2024

भागलपुर। सामाजिक संस्था ... भगत सिंह की जयंती संस्थापक जगतराम साह कर्णपुरी की अध्यक्षता में मनाई गई। कार्यक्रम ... ने कहा कि भगत सिंह 23 वर्ष की ... फांसी पर चढ़ गए। मुख्य अति... ...काश, अजय शंकर प्रसाद, राजीव रंजन, प्रेम कुमार सिंह और राजेश झा ने भी संबोधित किया।

जयंती पर याद किये गये शहीद भगत सिंह

भागलपुर। पीस सेंटर परिधि की ओर से कला केंद्र में भगत सिंह की जयंती मनाई गई। अध्यक्षता उज्जवल कुमार घोष और संचालन राहुल ने की। उज्ज्वल कुमार घोष, ने कहा कि भगत सिंह हमेशा विचारों को महत्व देते थे। अपने फांसी के तख्त पर पहुंचने के पहले तक वे किताबें पढ़ते रहे। इस अवसर सार्थक भरत, मनोज कुमार, सुजाता, प्रियंका सिंह, मनोज कुमार, शालिनी चौधरी, सुप्रिया, ऋचा आनंद, संजना दत्ता, मो. सहबाज, भाव्या, मुकेश कुमार सिंह, अमित कुमार, सुरैया सिद्दीकी आदि उपस्थित थे।

❖ Date: **29 September 2024**

Time : 8am- 6 pm

Location**: मंदार पर्वत, बांका, भागलपुर**
Name of Event/Activity **: विविध संस्कृति यात्रा**
Type of Activity : **Divercity Walk**
Brief Description: Highlights of the activity (Not more than 300 words)

पीस सेंटर परिधि द्वारा युवाओं में धर्म संस्कृति की सही समझ विकसित करने के उद्देश्य से एकदिवसीय विविध संस्कृति यात्रा का आयोजन 29 सितम्बर 2024 को किया गया। इस मौके पर 20 युवा युवतियों ने मंदार पर्वत का भ्रमण किया। जो भागलपुर से लगभग 70 km दूर बांका जिला में है | मंदार आदिवासी धर्म, जैन धर्म और हिंदू धर्म का संगम स्थल है। सर्वप्रथम युवा युवतियों ने आदिवासियों की एक संप्रदाय सफा होड़ के धार्मिक स्थल को देखा। सफा होड़ वैष्णव संप्रदाय से प्रभावित धर्म है लगता है। इसके धर्म गुरु सफेद कपड़ा धारण करते हैं। सफाहोड़ संप्रदाय के आदिवासी प्रकृति पूजक होते हैं इसलिए मकर संक्रांति के अवसर पर ये हजारों की संख्या में मंदार पर्वत की पूजा अर्चना करने आते हैं। मंदार पर्वत पर अवस्थित प्राकृतिक झील का बहुत महत्व है। यह संप्रदाय शाकाहारी और साफ सफाई पसंद होते हैं। प्रकृति से इनके लगाव के कारण ही इन्हें जड़ी बूटियां का बहुत ज्ञान होता है। वैद्यागिरी उनके प्रमुख काम और पेशा है। अक्सर वैद्यगिरी का काम निस्वार्थ भाव से किया जाता है। इसी पर्वत के शिखर पर जैन धर्म से संबंधित दसवें तीर्थंकर भगवान वासु पूज्य का एक मंदिरअवस्थित है। ऐसी मान्यता है कि जैन धर्म के दर्शन में तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य ने यहां वर्षों तक तप किया था और ज्ञान की प्राप्ति की थी। इसीलिए वासु पूज्य के पंचकल्याणक का यह प्रमुख स्थल है। यहां एक प्राकृतिक गुफा भी है इसके बारे में कहा जाता है कि कई जैन मुनियों ने यहां तप किया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि यह जैन धर्म का एक प्रमुख स्थल है, हजारों की संख्या में जैन तीर्थ यात्री भी आते हैं। इस पर्वत का तीसरा जुड़ाव बौद्ध धर्म से है। पर्वत की तलहटी में एक मनुष्य निर्मित गुफा है जिसे बौद्ध धर्म से जोड़कर देखा जाता है। कहां जाता है कि पाल शासन के दौरान इन गुफाओं में बौद्ध भिक्षु रहा करते थे और पास ही एक ज्ञान मंदिर बनवाया गया था जिसमें बौद्ध भिक्षु हजारों दीपक जलाते थे।

यात्रा के दौरान सभी छात्र-छात्राओं को बतलाया गया कि तीनों धर्म के अंतर निहित भाव क्या हैं। गौर से देखा जाए तो तीनों धर्म सफा होड़, जैन और बौद्ध धर्म अहिंसा प्रेम और प्रकृति सहचार्य पर विशेष ध्यान केंद्रित करता है। तीनों ही धर्म अहिंसा को प्रमुख महत्व देते हैं। जहां सफाहोड़ प्रकृति पूजा के साथ प्रकृति में स्थित जीव जंतुओं पर दया करने की सीख देता है वहीं जैन और बौद्ध धर्म भी अहिंसा, जीवों पर दया और प्रकृति सम्मान को विशेष महत्व देता है। समूह चर्चा में यह भी बात सामने आई कि हो सकता है पुरातन काल में यह तीनों एक साथ गुथे हुए हों और बाद में अलग-अलग धर्म गुरुओं के कारण अलग पहचान के साथ उभरे हो। धार्मिक भिन्नता होने के बावजूद आज तक किसी प्रकार का कोई टकराव नहीं हुआ। पहाड़ी के ऊपर मंदिरों के अधूरे अवशेष भी मिलते हैं परंतु यह किस धर्म से जुड़ा अवशेष है यह बता पाना कठिन है। समूहचर्चा द्वारा विविध संस्कृति यात्रा के सहभागियों का क्षमता वर्धन हुआ। अंत में पीस सेंटर के संयोजक राहुल ने यह कहा कि धार्मिक भिन्नता का मतलब सांस्कृतिक भिन्नता नहीं है। संस्कृति का निर्माण हजारों वर्षों के क्रियाकलापों और प्राकृतिक-सामाजिक जरूरतों व मान्यताओं के कारण होता है। इसलिए एक क्षेत्र में विकसित होने वाले धर्म में एकरूपता देखने को मिलती है। ऐसी यात्राएं हमें अपने समाज, धर्म और संस्कृतिको समझने में मदद करती है।

Theme: संस्कृति की समझ
Rationale: भारतीय सांस्कृतिक विरासत, विविधता में एकता की समझ बढ़ाना

Total number of participants (in that activity) : 22

राजीव कुमार सिंह (राहुल)
संयोजक:पीस सेंटर, भागलपुर